प्रकाशन तिथि : 15 मई, 2020
प्रेषण तिथि : 19 मई, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 05 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

एक निष्ठ और देव निष्ठ हो करें मुकाबला

आज हम एक अदृश्य राक्षस से मुकाबला कर रहे हैं। हमारे राष्ट्र का आस्तिकता में विश्वास है। हमारी संस्कृति और इतिहास अनूठा है। जब-जब धरती पर संकट आया है हमारे यहां परमेश्वर मानव शरीर रूप में आए हैं और दुष्टों का विनाश, सज्जनों की रक्षा की है। अधर्म के स्थान पर धर्म की स्थापना की है। परमेश्वर की प्रेरणा से हमें इस संकट का भी मुकाबला करना चाहिए। हमारे प्रधानमंत्री हमें बार-बार दिशा-निर्देश दे रहे हैं। विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री निर्देश दे रहे हैं, मीडिया में विस्तार से समझाया जा रहा है, फिर भी हम सावधान न रहे तो राक्षस को मौका मिल जाएगा। इसलिए हमें एकनिष्ठ और देवनिष्ठ होकर मुकाबला करना है। अपने आपको बचाना है, राष्ट्र को बचाना है और दुनियां को संदेश देना है कि भारत अनोखा राष्ट्र है। विभिन्न प्रकार की विभिन्नताओं के बावजूद एक होकर इस संकट से लड़ रहा है। सभी इस संकट से लड़ने को तत्पर हैं। प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, अधिकारी, कर्मचारी, न्यायाधीश, सेनाएं, सिविल डिफेंस, होमगार्ड, शिक्षक, मीडियाकर्मी कोई भी इस संकट की घड़ी में पीछे नहीं है बल्कि सभी साथ खड़े होकर इस आपदा से लड़ रहे हैं। चिकित्सा कर्मी, सफाई कर्मी, पुलिस कर्मी आदि अपनी जान पर खेलकर इस संकट से लड़ रहे हैं, अपने परिवारों के पास होकर भी दूर हैं, इन सबको मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूं।

8 मई को वर्चुअल माध्यम से कोविड-19 संकट बाबत् अपना संदेश देते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों ने ऐसे संकट में त्याग और बलिदान का इतिहास विरासत में छोड़ा है वह हमें ऐसे

संकट में मुकाबला करने की प्रेरणा देता है। महर्षि दधीची की हड्डियों के दान से वज्र बना था, अपने जीवन की परवाह किए बिना जीवन दान देने वाले महापुरुषों के मार्ग पर हमें चलने का प्रयास करना चाहिए। वर्तमान का संकट सभी के लिए संकट है। वेतन और पेंशन की समस्या हो रही है। व्यापारी, मजदूर, उद्योगपति सभी के लिए संकट खड़ा हो गया है। मजदूर पलायन कर रहे हैं। सरकारें भी उदारतापूर्वक खजाना खोलकर सहायता कर रही हैं, लेकिन खजाने की भी एक सीमा होती है। यह राष्ट्र हमारी माता है। माता की सेवा और बंदगी ही सपूत होने का दावा है। लेकिन कुछ अनावश्यक आलोचनाएं भी हो रही हैं, अफवाहें भी फैलायी जा रही हैं, भगवान ऐसे लोगों को सद्बुद्धि देवें। हमारे लिए विचारणीय विषय यह होना चाहिए कि हम इस राष्ट्र के प्रति क्या कर सकते हैं? यह युद्ध है और युद्ध लड़ने वाला योद्धा होता है। योद्धा के लिए भगवान श्रीकृष्ण का संदेश है, 'कर्तव्य भाव से युद्ध करना और परिणाम की चिंता नहीं करना।' हम भी अर्जुन की भांति भगवान श्रीकृष्ण के इस संदेश को स्वीकार करें और अपनी क्षमतानुसार इस युद्ध में संलग्न होवें। कोई निष्क्रय न रहे।

हमारा यह संघर्ष लंबा चलेगा, वैज्ञानिक लोग बता रहे हैं कि समय लगेगा, वर्ष भी लग सकते हैं इसलिए हमें कठिनाइयों के साथ रहने का अभ्यास करना पड़ेगा। तब तक सावधान रहना पड़ेगा जब तक कि इसे जड़ मूल से नष्ट न कर दें। इसलिए परस्पर सहयोग से रहें। जो निर्देश दिए गए हैं उनका पालन करें। भौतिक दूरियां बनाए रखें। मास्क पहने, बार-बार साबुन से हाथ धोते रहे। आवागमन से रोग फैलता है इसलिए इसे न्यूनतम करें। कठिनाई होगी लेकिन कठिनाइयों को सहन करें। हमारी परम्परा तो जीवन देकर जीवन बचाने की रही है। संसार जीयो और जीने दो की बात करता है लेकिन हमारे यहां तो मरकर भी जीवन देने का आदर्श रहा है। हर वर्ग, जाति और समुदाय के व्यक्ति को सोचना चाहिए कि राष्ट्र बच जाएगा तो हम भी बच जाएंगे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वर्चुअल माध्यम से मनाई प्रताप जयंती

आंग्ल पंचांग के अनुसार प्रतिवर्ष 9 मई को स्वतंत्रता और स्वाभिमान के अमर प्रतीक वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयन्ती देशभर में समारोह पूर्वक मनाई जाती है। इस बार कोरोना महामारी के वैश्विक संकटवश सभी तरह के समारोह पर रोक होने के कारण श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा वर्चुअल तरीके से महाराणा प्रताप की जयन्ती मनाई गई। इसके अंतर्गत संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के सान्निध्य में जयपुर स्थित केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में जयंती कार्यक्रम रखा गया जिसमें संघशक्ति में निवासरत स्वयंसेवक भौतिक दूरी के नियमों की पालना करते हुए सम्मिलित हुए। इस पूरे कार्यक्रम का लाइव प्रसारण श्री क्षत्रिय युवक संघ के अधिकृत

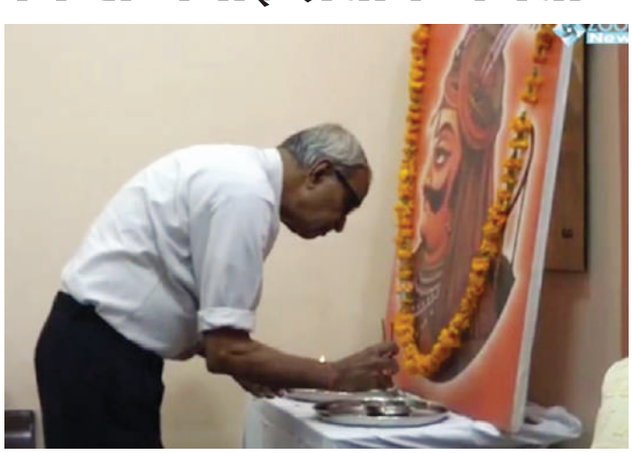

फेसबुक पेज पर व युट्यूब अकाउंट पर किया गया। कार्यक्रम की योजना पहले ही बनाकर सभी स्वयंसेवकों तथा समाजबंधुओं में प्रचारित कर दी गई थी जिससे देशभर से हजारों स्वयंसेवक व समाजबंधु परिवार सहित घर में रहकर ही वर्चुअल माध्यम से कार्यक्रम में विधिवत रूप से सम्मिलित हुए। प्रार्थना के पश्चात पुष्पांजलि गीत के साथ महाराणा प्रताप के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सूचना तकनीकी के उपयोग से 'नवाचार'

महामारी जनित परिस्थितियों में संघ के पूर्व निर्धारित शिविर स्थगित हो गए हैं। जब तक परिस्थितियां सामान्य नहीं हो तब तक सांघिक कार्य के लिए विभिन्न नवाचार किए जा रहे है। ऐस ही नवाचारों में से एक वर्चुअल शाखा है जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीरसिंह सरवड़ी जी व माननीय अजीतसिंह धोलेरा का सानिध्य मिल रहा है। इस शाखा में महावीरसिंह जी का 'साधक की समस्याएं' पुस्तक पर एवं अजीतिसंह जी का 'गीता और समाज सेवा' पुस्तक पर मार्गदर्शन मिल रहा है। आप दोनों के वीडियो पूर्व में रिकॉर्ड कर संघ के अधिकारिक फेसबुक पेज व युट्यूब चैनल अकाउंट पर डाले जाते हैं और प्रतिदिन शाम 7.00 से 8.00

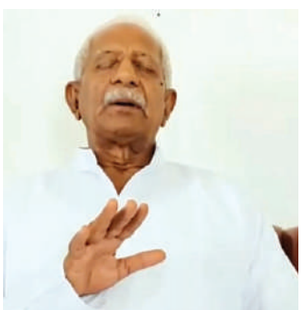

बजे लगने वाली शाखा में स्वयंसेवक उन्हें सुनकर मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। इस दौरान उभरने वाले प्रश्नों को वाट्सएप के माध्यम से आप तक पहुंच दिया जाता है। सभी को पूर्व में विषय बता दिया जाता है और पूर्व में पढ़कर उभरने वाले प्रश्न भी पहले भेज दिए जाते हैं।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

जनप्रतिनिधि रहते सरकारी साधनों के दुरुपयोग के उदाहरण आज के जनप्रतिनिधियों के लिए सामान्य आचरण बन चुके हैं। पांच वर्ष के लिए जनता की सेवा करने की बात कर जीतने वाला व्यक्ति जीतने के बाद अपने आपको जनता के धन का मालिक समझता है और उसे अपने लिए ही नहीं बल्कि अपने संबंधियों के लिए खर्च करना भी अधिकार समझता है। पूज्य तनसिंह जी ने ऐसा कभी नहीं किया। जैसा कि इस कॉलम में पहले ही बता दिया गया है कि वे सरकार द्वारा उन पर किए गए खर्च का भी हिसाब रखते थे और सावधानी रखते थे कि राजकीय कोष से जितना उन पर व्यय किया गया है, उसके बदले उन्होंने उद्यम किया है या नहीं। राजकीय कोष की बात छोड़े बल्कि उन्होंने ने तो पार्टी फंड से मिले पैसे को भी किफायत पूर्ण उपयोग कर बचाने का प्रयास किया है। ऐसा ही उदाहरण उनके द्वारा उनके संसदीय क्षेत्र में उनके दौरे का है। इन दौरों के लिए उन्होंने कभी भी सरकारी वाहन की अपेक्षा नहीं की बल्कि अपनी स्वयं की जीप आर.जे.सी. 116 का ही उपयोग किया। जब भी निकलते, अपने साथियों को उसमें बिठाते, थोड़ा बहुत राशन भी साथ रखते एवं प्रायः स्वयं ही चालक का दायित्व निभाते। बाड़मेर जैसलमेर के दूरदराज के गांवों के दौरे के समय अपने साथ सामान्य बीमारियों की थोड़ी दवाइयां भी रखते एवं गांवों में यदि कोई बीमार होता तो उसे अपेक्षित दवाई भी देते। सभी बड़े-बुजुर्गों से व्यक्तिशः मिलकर सुख-दुःख पूछते एवं छोटे बच्चों के लिए भी मीठी गोलियां रखते। इस प्रकार पूरे संसदीय क्षेत्र को अपने परिवार की भांति संभालते। यही कारण रहा कि वे बिना किसी कुटिलता के अपने क्षेत्र के स्वाभाविक नेता बने। उनका यह व्यवहार हमारे वर्तमान जनप्रतिनिधियों के लिए नजीर है। काश वे इसे समझ कर कुछ अनुकरण कर पाते।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... **- अभयसिंह रोडला**

नागरिक सेवा परीक्षा (सिविल सर्विसेज एग्जाम)

यह देश की सबसे प्रतिष्ठित तथा कठिन समझी जाने वाली परीक्षा है। संघ लोक सेवा आयोग द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस परीक्षा को सामान्यतः आईएएस (IAS) परीक्षा के नाम से जाना जाता है, यद्यपि इसका अधिकृत नाम सिविल सर्विसेज एग्जाम है।

इस परीक्षा के माध्यम से संघ लोक सेवा आयोग द्वारा ऑल इंडिया सर्विसेज तथा सेन्ट्रल सिविल सर्विसेज की कुल 24 सेवाओं के लिए अभ्यर्थियों का चयन किया जाता है। ऑल इंडिया सर्विस के अंतर्गत भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS), भारतीय पुलिस सेवा (IPS) तथा भारतीय वन सेवा (IFS) को सम्मिलित किया जाता है जबकि सेंट्रल सिविल सर्विसेज के अंतर्गत भारतीय विदेश सेवा, भारतीय राजस्व सेवा, भारतीय सिविल लेखा सेवा, भारतीय रेल सेवा, भारतीय पोस्टल सेवा आदि को सम्मिलित किया जाता है।

यह परीक्षा तीन चरणों में सम्पन्न होती है-

(i) प्रारंभिक परीक्षा - इसके अंतर्गत दो प्रश्नपत्र होते हैं-

(अ) सामान्य अध्ययन-I : इसमें समसामयिकी, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, सामान्य विज्ञान आदि विभिन्न विषयों से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं।

(ब) सामान्य अध्ययन-II : इसमें भाषाई समझ, आंकिक योग्यता, तर्कशक्ति आदि से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं। इस प्रश्नपत्र में न्यूनतम 33 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।

उपरोक्त दोनों प्रश्नपत्र बहुवैकल्पिक प्रकार के होते हैं, दोनों में पूर्णांक 200 है तथा प्रत्येक की अवधि 2 घंटे होती है। दोनों में प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक तिहाई अंक काट लिया जाता है।

(ii) मुख्य परीक्षा- इसके अंतर्गत कुल 9 प्रश्न पत्र होते हैं। दो प्रश्नपत्र अर्हक (क्वालीफाइंग) होते हैं जिनमें एक अंग्रेजी तथा दूसरा हिंदी अथवा अन्य किसी मान्यता प्राप्त क्षेत्रीय भाषा का होता है जिसका चयन अभ्यर्थी द्वारा किया जाता है। चार प्रश्नपत्र सामान्य अध्ययन के तथा एक प्रश्नपत्र निबंध का होता है। दो प्रश्नपत्र उस वैकल्पिक विषय के होते हैं जिसका चयन अभ्यर्थी करता है। अभ्यर्थी को इसका चयन आयोग द्वारा उपलब्ध 26 विषयों की सूची में से करना होता है।

इनमें अर्हक प्रश्नपत्र 300-300 अंक के तथा अन्य सभी प्रश्नपत्र 250-250 अंक के होते हैं। मुख्य परीक्षा के सभी प्रश्नपत्र विषयनिष्ठ (Subjective) प्रकार के होते हैं।

(iii) व्यक्तित्व परीक्षण/साक्षात्कार- इसके अंतर्गत संघ लोक सेवा आयोग द्वारा गठित विशेषज्ञों के बोर्ड द्वारा अभ्यर्थी का साक्षात्कार लिया जाता है। इसके लिए कुल 275 अंक निर्धारित हैं।

प्रारंभिक परीक्षा केवल स्क्रीनिंग परीक्षा है तथा उसके अंक अंतिम परिणाम में नहीं जोड़े जाते हैं। अंतिम परिणाम मुख्य परीक्षा तथा साक्षात्कार में प्राप्त अंको को जोड़कर निकाला जाता है। **क्रमशः**

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

गुजराती वीर

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

गुजरात राज्य में राजपूतों की अनेक रियासतें थी जिनके शासक विभिन्न वंश-गोत्रों से संबंध रखते थे। गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र काठियावाड़ तो बहुत समृद्ध है। गढवी चारणों द्वारा सौराष्ट्र (काठियावाड़) व कच्छ के शासकों, योद्धाओं व बारोटियो (डकैतों) की वीर गाथाएं गाई जाती है। इनमें कई प्रतापी वीर योद्धाओं को इतिहास में स्थान मिला है परन्तु अनेकों अनाम उत्सर्ग कर गए हैं।

मुखड़ो जी गोहील : ये पीरम बेठ घोंघा के गहलोत वंशीय राजपूत थे। इन्होंने दिल्ली के सुल्तान से लोहा लिया। बड़ी वीरता से बिना सिर इनका धड़ कई किलोमीटर तक दुश्मनों से लड़ता चला गया। ये पीर के रूप में पूजित हैं।

जाम नरपत जी जाड़ेजा : इन्होंने गजनी के बादशाह फिरोज शाह का सिर उनके दरबार में ही काट डाला और बड़ी वीरता से लड़ते हुए युद्ध में विजय होकर गजनी के शासक बने।

राव देशलजी जाड़ेजा : ये बहुत बहादुर योद्धा थे। ईरान के फारसी आक्रांता बुलंद खान की बड़ी सेना को अपने कुछ सैनिकों की उपस्थिति में बुरी तरह परास्त कर भागने को मजबूर कर दिया।

झाला रायसींग जी : हलवद सौराष्ट्र के रायसींग जी ने बादशाह अकबर के दरबार में अपना पराक्रम दिखाते हुए उसके पंचहत्था पहलवान को अपने एक घूसे (मुक्के) के प्रहार से धराशायी कर दिया। पहलवान का सिर उसके धड़ में घुस गया था।

हमीर जी गोहिल : भावनगर के लाठी ठिकाने के राजकुमार वीर हमीर जी गोहिल सोमनाथ मंदिर के रक्षार्थ अपने कुछ साथियों के साथ मुज्जफरशाह की सेना से बहुत बहादुरी से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए थे तब उनकी उम्र मात्र 16 वर्ष थी तथा कंवारे थे। अपनी भाभी को यह कहकर सोमनाथ मंदिर को बचाने घर से निकले थे कि कोई मेरे साथ आए या न आए, लेकिन मैं जाऊंगा।

दादा वचरा जी सोलंकी : पाबू जी राठौड़ की तरह गायों की रक्षा के लिए विवाह के फेरों से उठकर विधर्मियों से युद्ध किया और सिर कटने के बाद भी धड़ लड़ता रहा। दादा वचरा जी गुजरात के बड़े लोक देवता हैं।

लखधीर जी परमार : ये मूली रियासत के परमार क्षत्रिय थे। एक मुस्लिम हेजत खां की पुत्री को अपहरण से बचाने के लिए सिंध के बादशाह की सेना से परिवार सहित लड़ते हुए काम आए थे।

करसनदेव वाघेला : पाटण में अलाहउद्दीन खिलजी की सेना से डटकर मुकाबला किया एवं रणखेत रहे।

लाखाजी जाडेजा : विंझाण के लाखाजी सिन्ध के शासक कुलहोरा गुलामशाह से झारा के युद्ध में अद्भुद रण कौशल दिखाकर वीरगति को प्राप्त हुए।

वगतसिंह गोहिल : भावनगर के पास स्थित तलाजा पर नरूद्दीन का अधिकार था। ठाकुर वगतसिंह ने तलाजा पर आक्रमण किया। नरूद्दीन की बन्दुकों पर राजपूती तलवारे भारी पड़ी। वगतसिंह के हाथों नरूद्दीन मारा गया एवं तलजा पर उन्होंने कब्जा कर लिया।

ठाकुर सरतान जी वाला : तातर खां घोरी ने ढांक पर हमला किया। कम संख्या में होने के कारण सरतान जी ढांक छोड़कर जंगलों में चले गए। बाद में आई नागबाई चारण के आशीर्वाद से उन्होंने ढाक पर हमला किया व तातर खां को वहां से मार भगाया। ढांक के दरबार गढ़ में रखे नगारे जो मुस्लिमों से जीते थे, उस युद्ध की याद दिलाते हैं।

तेजमल जी, सारंग जी, वेजरो जी सोलंकी : सुलतान अहमदशाह ने कालरी पर आक्रमण किया। कालरी की कई महीनों घेराबंदी रही। अन्त में खाद्य सामग्री समाप्त होने पर सोलंकियों ने शाका किया। सुलतान के 42 बड़े सरदार, 1300 सैनिक व 17 हाथी मारे गए। उक्त तीनों वीर इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए।

जाम सता जी, कुंवर अजा जी, मेरामण जी हाला जाड़ेजा : कर्णावटी (अहमदाबाद) के सुल्तान मुजफरशाह को दिल्ली के बादशाह अकबर से बचाने के लिए 'भूचर मोरी' में लोमहर्षक युद्ध किया। अद्भुत वीरता के बावजूद जूनागढ़ के नवाब व लोमा काठी की दगाबाजी से जीता युद्ध हारे तथा वीरगति प्राप्त की।

राण जी गोहिल : अहमदाबाद के सुल्तान को हराकर वापस लौट रहे थे। उनकी रानियों ने युद्ध हार की गलत फहमी में जौहर कर लिया। यह देख राणजी वापिस सुल्तान सेना पर टूट पड़े व वीर गति पाई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संघ की वेबसाईट पर काम जारी

श्री क्षत्रिय युवक संघ की वेबसाईट को नवीनतम तकनीक पर आकर्षक बनाने का काम भी जारी है। इसके लिए संचालन प्रमुख जी के निर्देशन में पवनसिंह बिखरणिया, बृजराजसिंह खारड़ा, अभयसिंह रोडला व हर्षवर्धनसिंह रेड़ा की टीम द्वारा कार्य किया जा रहा है। अभी प्रथम चरण में होम पेज एवं अन्य वेब पेज की डिजायन को लेकर काम पूरा हो चुका है। अब इसमें सामग्री को अद्यतन करने का कार्य प्रारम्भ किया जाएगा।

नीट पीजी के विद्यार्थियों से अन्याय, मुख्यमंत्री तक पहुंचाई बात

मेडिकल की स्नात्कोत्तर स्तर की पढ़ाई नीट पीजी में वर्ष 2020-21 के सत्र के लिए ईडब्ल्यूएस हेतु 10 प्रतिशत आरक्षण प्रस्तावित था और इसके लिए 145 सीटें बढ़ानी थीं। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित एमसीआई द्वारा भी राजस्थान को 915 सीटें बढ़ाने की अनुमति दी गई थी। मगर विभाग के अफसरों ने एक भी सीट नहीं बढ़ाई और सामान्य वर्ग की सीटों में कटौति कर 55 सीटें ईडब्ल्यूएस हेतु आवंटित कर दी जो सामान्य वर्ग के अभ्यर्थियों के साथ सरासर अन्याय है। अफसरों ने अपनी कारस्तानी छिपाने के लिए श्रेणीवार तालिका भी जारी नहीं की। इस पूरे विषय को एक दैनिक समाचार पत्र द्वारा विस्तार से छापा गया। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के संज्ञान में यह विषय आने पर दिनांक 11 मई 2020 को माननीय मुख्यमंत्री को अखबार की कटिंग के साथ विस्तार से ज्ञापन मेल द्वारा प्रेषित किया गया एवं सभी सहयोगियों से ऐसे मेल करने का आग्रह किया गया। इस प्रकार के एक हजार से अधिक मेल मुख्यमंत्री कार्यालय को प्रेषित कर उनका ध्यान इस और आकर्षित किया गया है।

जोधपुर का स्थापना दिवस मनाया

सूर्यनगरी के नाम से प्रसिद्ध एवं मारवाड़ राज्य की राजधानी रही जोधपुर का 562वां स्थापना दिवस 12 मई को जोधपुर शहर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर मनाया गया। मेहरानगढ़ के निकट जसवंतथड़ा स्थित राव जोधा की अश्वारूढ़ प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। साथ ही मेहरानगढ़ किले की नींव हेतु बलिदान देने वाले राजाराम मेघवाल के स्मारक पर भी पुष्पांजलि की गई। नगर में विभिन्न संस्थाओं द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित किए गए। कच्ची बस्तियों में राशन वितरित किया गया।

'ऑनलाईन संवाद का क्रम जारी'

कोविड-19 के चलते भौतिक दूरियों की मजबूरी के बीच श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउण्डेशन के सहयोगियों के बीच ऑनलाईन संवाद का काम जारी है। जिन जिलों में कार्य प्रारम्भ हुआ है वहां विधानसभा वार वाट्सएप समूह बनाए गए हैं, उन समूहों में नियंत्रित संवाद जारी है। उसके साथ ही उन समूहों में जुड़े चुनिंदा लोगों से वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से संवाद किया जा रहा है। विगत दिनों में लगभग प्रतिदिन किसी न किसी क्षेत्र के सहयोगियों से केन्द्रीय टीम का ऐसा संवाद किया गया। इस संवाद के दौरान फाउण्डेशन के मुख्य उद्देश्य एवं उसके लिए करणीय कार्यों पर चर्चा की गई। चर्चा में शामिल सहयोगियों के प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए। अब तक डीडवाना, परबतसर, लाडनूं, मकराना, मेड़ता, नागौर, खींवसर, बीकानेर शहर, नोखा, कोलायत, सीकर, जयपुर शहर, शिव, बाड़मेर शहर, चौहटन, बायतु, बिलाड़ा-भोपालगढ़, ओसियां, शेरगढ, लोहावट, लक्ष्मणगढ आदि क्षेत्रों के सहयोगियों से एकाधिक बार ऐसे संवाद किए गए एवं अभी प्रारंभ में जयपुर, जोधपुर व बीकानेर संभाग के छात्र नेताओं की कोविड के कारण बिगड़ी स्थितियां सामान्य होने पर संभागीय कार्यशालाएं रखने का भी निर्णय हुआ। प्रतिदिन के कार्य की प्रतिदिन समीक्षा भी इसी माध्यम से की जा रही है।

प्रताप एक व्यक्ति नहीं, एक विचारधारा है

कहा जाता है कि महान लोगों की अनेकों पहचानें होती हैं। महाराणा प्रताप एक ऐसी शख्सियत हैं जिन्होंने मृत्यु की नाद पर जीवन को थिरकना सिखाया। जिन्होंने वीरता के प्रतिमानों को कई नए आयाम दिए। महाराणा प्रताप का संघर्ष सदैव प्रेरणादायी रहेगा।

राणा प्रताप के समक्ष दो रास्ते थे, एक अन्य शासकों की भाँति स्वाभिमान का समर्पण कर शाही जिंदगी जीना, दूसरा इनका संघर्ष-पूर्वक जीवन जो उन्होंने जीया और वह आज हमें 450 वर्ष बाद भी प्रेरणा दे रहा है।

विश्व के अद्यतन इतिहास में शायद ही कोई ऐसा शासक रहा हो जिसकी जनता इतनी विकट परिस्थितियों के बावजूद भी अत्यंत प्रतिबद्धता से शासक के साथ खड़ी रही। 30 से अधिक वर्षों तक युद्धों के कारण मेवाड़ उजड़ा हुआ था, जनता को भी अपने घरों को छोड़कर पहाड़ों पर जीवन व्यतीत करना पड़ा। जिस जनता ने 30000 से अधिक लोगों का जनसंहार देखा हो फिर भी उस जनता की प्रताप के स्वाभिमान एवं स्वाधीनता की चाह के प्रति आसक्ति ही प्रताप को जनप्रिय एवं महान बनाती है।

क्या वर्तमान समय में किसी व्यक्ति या नेता से ऐसी उम्मीद की जा सकती है? संघर्ष एवं सुविधाओं में प्रत्येक व्यक्ति सुविधाओं का ही वरण करेगा। प्रताप के समक्ष जहां एक और अधीनता के बदले आधा हिंदुस्तान का साम्राज्य मिलना था वहीं दूसरी ओर जंगलों में भटकते हुए संघर्ष के 30 वर्ष। लेकिन राणा प्रताप ने अधीनता के बदले संघर्ष को चुना, स्वाभिमान को चुना।

राणा प्रताप का इतिहास हल्दीघाटी के युद्ध से बहुत आगे तक विस्तृत है किंतु कुत्सित विचारधारा के लोगों द्वारा इसे हल्दीघाटी तक ही सीमित कर दिया गया। 1576 ई. में हुए हल्दीघाटी युद्ध में अकबर अपने उद्देश्य में सफल नहीं रहा था जिसमें एक ओर 20000 मेवाड़ी सैनिक थे वहीं दूसरी ओर 80000 मुगल सेना थी। हल्दीघाटी के बाद 1577 ई. से 1582 ई. तक निरंतर अनेकों संघर्ष होते रहे। एक नई छापामार युद्ध प्रणाली से राणा प्रताप मुगल सैनिकों को निरंतर हराकर कमजोर करते रहे। 1582 ई. में दिवेर युद्ध में राणा प्रताप की सेना ने अकबर की सेना को परास्त कर दिया। दिवेर युद्ध ने मुगलों का मनोबल पूरी तरह से तोड़ दिया था, परिणाम स्वरूप मुगलों को मेवाड़ में स्थापित सभी 36 थानों को छोड़कर भागना पड़ा। 1585 ई. से 1597 ई. के बीच राणा प्रताप ने चित्तौड़गढ़ एवं मांडलपुर को छोड़कर संपूर्ण मेवाड़ पर पुनः अपना राज्य स्थापित कर लिया। कर्नल टॉड ने अपनी पुस्तक "एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" में हल्दीघाटी को मेवाड़ की थर्मोपोली और दिवेर युद्ध को मेवाड़ का मैराथन बताया। टॉड लिखते हैं कि आल्प्स पर्वत के समान अरावली में कोई भी ऐसी घाटी नहीं जो राणा प्रताप के किसी न किसी वीर कार्य, उज्जवल विजय या उससे अधिक कीर्ति युक्त पराजय से पवित्र न हुई हो। राणा प्रताप एक शासक से बढ़कर मानवता के पुजारी थे उन्होंने समाज के दलित, दमित, पिछड़े वर्ग को मुख्यधारा से जोड़ा और उन्हें सामाजिक पहचान दिलाई। संकीर्णता से ऊपर उठकर सर्वधर्म समभाव को अपनाया। राष्ट्र-सम्मान तथा स्वतंत्रता के समक्ष निजी-हितों की तिलांजलि दी, यही बातें हैं जो राणा प्रताप को एक विलक्षणता देती हैं। महाराणा प्रताप की सेना में 4 सेनापति थे, जिसमें समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व था। भीलों के राजा पूंजा जैसे आदिवासी बंधु को उन्होंने सेनापति का दर्जा दे, भीलों की दशा सुधारी, उन्हें मुख्यधारा में जोड़ा। वहीं मुस्लिम धर्म के हकीम खां सूरी को भी अपना सेनापति बनाया, जालौर का ताज खान भी उनका सहयोगी था।

अकबर ने अपने नवरत्न अब्दुल रहीम खानखाना को मेवाड़ पर आक्रमण हेतु अजमेर का सूबेदार बनाया था। खानखाना मेवाड़ के समीप शेरपुर में डेरा डालकर गतिविधियां संचालित करने लगा। राणा प्रताप के पुत्र अमर सिंह को ज्ञात होने पर उसने शेरपूर किले पर आक्रमण कर लूट लिया तथा रहीम खानखाना के परिवार को भी बंदी बना महाराणा प्रताप के समक्ष प्रस्तुत किया जिसमें रहीम खान-खाना के पत्नी-बच्चे भी शामिल थे, महाराणा प्रताप यह देखकर क्रोधित हुए तथा खानखाना के परिवार को ससम्मान पुनः लौटा दिया। शत्रु पक्ष के रहीम खानखाना भी इस उदारता से अत्यंत प्रभावित हुये। महाराणा प्रताप के बारे में अब्दुर्रहीम खान-ए-खाना के ये यादगार और बेहद दिलचस्प शब्द हैं-

धरम रहसी, रहसी धरा, खिस जासे खुरसाण।
अमर बिसंभर ऊपरे रखिओ नहचो राण॥

अर्थात धर्म रहेगा, धरती रहेगी, परन्तु शाही सत्ता सदा नहीं रहेगी। अपने ईश्वर पर भरोसा करके राणा ने अपने सम्मान को अमर कर लिया है।

राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रप्रेम, स्वाभिमान, स्वाधीनता की प्रतिबद्धता, सामाजिक समरसता, नारी सम्मान, दलित-दमित उद्धार इन सभी बातों ने प्रताप को अविस्मरणीय बनाया जो आज भी प्रेरणा के पुंज हैं। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

संपादकीय

स्वाधीन, स्वतंत्र एवं स्वाभिमान

शीर्षक में लिखे तीनों शब्द अंतर्सम्बन्धित हैं। इन तीनों शब्दों में एक क्रम है और पहला अगले का पूरक है। पहले दो शब्द हमें समानार्थी से लगते हैं लेकिन ये भी समानार्थी नहीं है। पहला होने पर ही दूसरा फलित हो सकता है। इन तीनों शब्दों के अर्थ की विवेचना करें उससे पहले इन तीनों शब्दों की समानता को देखा जाना चाहिए। तीनों शब्दों के प्रारंभ में 'स्व' लिखा हुआ है। 'अधीन' में 'स्व' उपसर्ग लग कर स्वाधीन बना, 'तंत्र' में 'स्व' उपसर्ग लग कर स्वतंत्र बना वहीं 'अभिमान' में 'स्व' जुड़ने से स्वाभिमान बना। इस प्रकार इन तीनों में ही 'स्व' महत्वपूर्ण है। सनातन संस्कृति में 'स्व' का अर्थ वह सत्ता है जिसके अस्तित्व के कारण व्यक्ति का अस्तित्व बना रहता है। 'स्व' का सामान्य अर्थ स्वयं माना जाता है। इसे ही 'मैं' कह सकते हैं। 'मैं' कौन है? वह सत्ता जिसके कारण 'मैं' का अस्तित्व है। इस प्रकार उदात्त आध्यात्मिक अर्थ में 'स्व' का अर्थ परमेश्वर की वह सत्ता है जो व्यक्ति में विराजमान रहकर उसके अस्तित्व को कायम रखती है और सरल अर्थ में समझें तो हमारे भीतर स्थित देवत्व, हमारा विवेक आदि भी 'स्व' का अर्थ माना जा सकता है। अब इसी आधार पर हम उपरोक्त तीनों शब्दों के अंतर्सम्बन्ध को समझने का प्रयास करें पहले शब्द स्वाधीन का अर्थ हुआ स्वयं के अधीन। स्वयं के अधीन होने का अर्थ है व्यक्ति स्वयं किसी अन्य के अधीन न हो, पराधीन न हो। अपने विशुद्ध स्वरूप के अतिरिक्त व्यक्ति यदि उसमें स्वयं में स्थित विकृतियों के अधीन है तो वह भी स्वाधीन नहीं है। एक कामी व्यक्ति अपनी कामनाओं के अधीन है, स्वाधीन नहीं है। एक क्रोधी व्यक्ति, एक लोभी व्यक्ति, एक मोहग्रस्त व्यक्ति, एक अहंकारी व्यक्ति अपने क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के अधीन रहेगा, स्वाधीन नहीं हो सकता। सरल शब्दों में समझे तो लोभी, कामी, मोहग्रस्त या अहंकारी व्यक्ति अपने इन दुर्गुणों के कारण किसी न किसी अन्य के अधीन हो ही जाएगा। इस प्रकार ये सभी दुर्गण उसकी स्वाधीनता में बाधक है। जिस व्यक्ति का अपने इन दुर्गुणों पर नियंत्रण होगा वही पूर्ण रूपेण स्वाधीन माना जा सकता है। यह स्वाधीनता दीर्घ साधना की मांग करती है जब व्यक्ति उस साधना में संलग्न होता है तो वह शनैः शनैः क्रमशः स्वाधीन होता जाता है और वह जिनता स्वाधीन होता जाता है उतना ही स्वतंत्र के लिए पात्र होता जाता है। तंत्र का अर्थ व्यवस्था होता है। स्वतंत्र का अर्थ स्वयं की व्यवस्था मानी जाएगी। इस प्रकार स्वतंत्रता स्वाधीनता का अगला चरण है। यदि व्यक्ति स्वाधीन नहीं है और वह स्वतंत्रता की बात करता है तो वह बेमानी है। आज हम कहने को तो स्वतंत्र हैं लेकिन क्या हमारा स्वयं का तंत्र है? अपनी विकृतियों के कारण अन्यों के अधीन होने वाले लोग स्वयं का तंत्र विकसित नहीं कर सकते। अकबर के समय जो लोग अपनी विकृतियों के गुलाम थे, जो सुखेच्छा से ग्रसित थे उन्होंने उसकी गुलामी स्वीकार कर ली लेकिन प्रताप क्योंकि स्वयं को अधीन करना जानते थे इसलिए स्वतंत्रता को अपना सके। यदि दुर्गादास स्वाधीन नहीं होते तो औरंगजेब द्वारा कभी के छले जा चुके होते लेकिन उनको औरंगजेब नहीं छल पाया। शिवाजी ने अपना स्वतंत्र विकसित कर मराठा राज्य की स्थापना की क्यों कि वे स्वाधीन थे। लेकिन इन सब पूर्वजों के वंशज स्वाधीनता के अभाव में स्वतंत्रता कायम नहीं रख पाए। इस प्रकार स्वतंत्रता की पहली शर्त स्वाधीनता है और स्वाधीनता के अभाव में स्वतंत्रता अध्ययन का विषय हो सकती है, जीवन का नहीं। कहने को हम मानते हैं कि आज हमारा अपना तंत्र है लेकिन हम कितने स्वतंत्र हैं, यह हम जानते हैं। अब हम तीसरे शब्द पर आते है। जिसका अपना स्वयं का तंत्र नहीं होता वह स्वाभिमान को नहीं बचा सकता। उसे अपने आप पर गर्व नहीं हो सकता क्योंकि गुलाम व्यक्ति का कैसा अभिमान और कैसा गर्व? उसे तो तंत्र की गुलामी में तंत्र का संचालक जैसे चलाता है, वैसे चलना पड़ता है और जो दूसरों के हांकने से हांका जाता हो उसका कैसा स्वाभिमान? इस प्रकार ये तीनों शब्द क्रमशः एक प्रक्रिया का हिस्सा हैं जिसमें बाद वाले के लिए पहला आवश्यक है। अभी 9 मई को हमने महाराणा प्रताप की जयंती मनाई, ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया (25 मई) को फिर मनाएंगे, वह इसीलिए मना रहे हैं कि प्रताप स्वाभिमान का प्रतीक हैं। वे स्वाभिमानी क्यों थे क्यों कि वे स्वतंत्र थे और उनकी स्वतंत्रता की रक्षा उनके स्वाधीन होने के कारण ही हो पाई। श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने संपर्क में आने वाले स्वयंसेवक को इसी प्रक्रिया से गुजारता है। वह अपनी 'अभ्यास और वैराग्य' की प्रणाली द्वारा पहले व्यक्ति को स्वाधीन होना सिखाता है और फिर क्रमशः स्वतंत्रता और स्वाभिमान की ओर बढ़ाता है।

खरी-खरी

आपराधिक घटनाएं और सामाजिक प्रतिक्रिया

अपराध किसी भी समाज व्यवस्था में अनहोनी घटना नहीं है। रामराज्य के बारे में यह मान्यता है कि वहां अपराध नहीं था लेकिन वहां भी सीता त्याग का कारण बनी कुत्सित सोच विद्यमान थी। श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों में उद्देश्य के बौद्धिक में सृष्टि की विशेषता बताते हुए इसे त्रिगुणात्मक एवं द्वंद्वात्मक बताया जाता है। यह भी बताया जाता है कि जब तक तीनों गुण (सत, रज और तम) रहेंगे तब तक द्वंद्व (सत और तम का संघर्ष) भी जारी रहेगा। यह इस सृष्टि का शाश्वत नियम है कि कभी भी पूर्णरूप से न तो तम का नाश होता है और न ही सत का। ऐसे में जब तम सदा सर्वदा के लिए रहना है तो अपराध भी समाप्त नहीं हो सकता। इसलिए दिन प्रतिदिन होने वाली आपराधिक घटनाएं स्वाभाविक है। अनेक प्रकार के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक विवाद किसी भी समाज व्यवस्था की सामान्य बात है। ऐसे विवाद जब उग्र रूप लेते हैं तो उनके कारण अपराध का घटित होना स्वाभाविक है। जैसे कई बार जमीन के विवाद को लेकर कोई मारपीट और हत्या आदि अपराध हो जाते हैं, कई बार किसी अन्य विवाद को लेकर। इस प्रकार की घटनाएं नितांत व्यक्तिगत होती है। इसी प्रकार कई बार किसी आपराधिक मानसिकता के व्यक्ति द्वारा किसी के साथ कोई अपराध किया जाता है तो वह भी एक व्यक्ति द्वारा अन्य के प्रति किया गया अपराध होता है। ऐसे अपराध भी समाज की वर्तमान परिस्थितियों में स्वाभाविक हैं। ऐसे अपराधों को रोकना कानून व्यवस्था का विषय है और अपराधी को सजा मिलनी ही चाहिए। यह सभ्य समाज की प्रथम आवश्यकता है और जिन समाजों में अपराधियों को दंडित नहीं किया जाता है वहां सभ्यता भी शनैः शनैः निःशेष होने लगती है। लेकिन हमारे इस कॉलम का आज का वरैण्य विषय इन आपराधिक घटनाओं पर होने वाली सामाजिक (जातीय) प्रतिक्रिया है। यदि यह विवाद दो भिन्न जातियों के लोगों के बीच हो तो हमारी अपरिपक्व प्रतिक्रिया प्रायः इन व्यक्तिगत एवं पारिवारिक विवादों को दो समुदायों के बीच के विवाद बना देती है। किसी भी विवाद के कारण घटित अपराध में कोई एक पक्ष सही या गलत हो सकता है लेकिन ऐसे हर विवाद को जातीय (वर्ग) स्वरूप देना सभ्य समाज व्यवस्था के लिए घातक है। किसी भी आपराधिक मानसिकता के व्यक्ति द्वारा किया गया अपराध किसी जाति के खिलाफ नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज व्यवस्था के प्रति किया गया अपराध होता है और उसके प्रति प्रतिक्रिया भी एक अपराधी के खिलाफ होनी चाहिए लेकिन हमारी अपरिपक्व जातीयता उसे दो समाजों के बीच संघर्ष बना देती है। ज्यों ही उसे ऐसा स्वरूप दिया जाता है तो एक समाज उस अपराधी के विरोध में जाति के नाम पर एकजुट होता है तो अपराधी के सहयोगियों को भी जाति के नाम पर उसे संरक्षित करने का अवसर मिल जाता है। इस प्रकार जो घटना विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत या पारिवारिक विवाद के कारण हुई या किसी कुत्सित मानसिकता के अपराधी के कृत्य के कारण हुई वह सामाजिक धड़ेबंदी का स्वरूप ले लेती है। समाज और जाति के नाम पर महत्त्व पाने की महत्वाकांक्षा पाले लोग ऐसे अवसरों का उपयोग करते हैं और उनका यह गैर जिम्मेदाराना व्यवहार अशांति और अलगाव में परिणत होता है। इसलिए हमें यह सावधानी रखनी चाहिए कि किस विषय पर सामाजिक प्रतिक्रिया करनी चाहिए और किस से बचना चाहिए। व्यक्तिगत या पारिवारिक विवादों के कारण हुए मामलों में पहले पूरी जानकारी ली जानी चाहिए। केवल सोशल मीडिया के संदेशों के आधार पर अपनी प्रतिक्रिया देने से बचना चाहिए। यदि सम्पूर्ण जानकारी जुटाने के बाद यह लगता है कि उक्त अपराध का कारण उसके हमारे समाज का होना है तब ही उस पर संज्ञान लिया जाना चाहिए और वह भी किसी समाज के खिलाफ न होकर उक्त अपराधी के खिलाफ होना चाहिए। लेकिन ऐसी संभवना बहुत कम ही होती है। व्यक्तिगत और पारिवारिक विवादों का कारण किसी जाति विशेष का होना बहुत कम पाया जाता है इसलिए ऐसे विवादों को समाजों के बीच विवाद बनाने से बचना चाहिए। इसी प्रकार किसी अपराधी की अपराधवृत्ति के कारण कोई अपराध घटित हुआ हो तो यह विशुद्ध रूप से कानून व्यवस्था का मामला होता है। हमें हमारे स्तर पर व्यक्तिगत रूप से पीड़ित पक्ष का सहयोग करना चाहिए लेकिन इसे भी सामाजिक बनाने से बचाना चाहिए। क्यों कि ऐसा करते ही उस अपराधी के समाज के प्रतिक्रियावादी लोग उसके पक्ष में आ जाते हैं और अनावश्यक रूप से अपराधी का संरक्षण होने लगता है। इसलिए यदि हमें समाज और जाति के नाम पर सकारात्मक काम करना है तो इस प्रकार के नकारात्मक मामलों से बचना चाहिए। जब तक कोई विषय सम्पूर्ण समाज से जुड़ा न हो तब तक उस विषय पर संज्ञान लेने से पहले अनेक बार सोचना चाहिए और फिर भी आवश्यक लगे तो ही संज्ञान लेना चाहिए। प्रायः कुछ लोग कहते हैं कि सामने वाला समाज ऐसा कर रहा है तो यह भी हमें स्पष्ट होना चाहिए कि सभी समाजों में प्रतिक्रियावादी तत्व होते हैं, हमारी ऊर्जा ऐसी प्रतिक्रियाओं का जवाब देने के लिए ही नहीं है बल्कि उसका समुचित उपयोग कर कुछ सकारात्मक करने के लिए है। इसलिए सावधानी अपेक्षित है।

प्रसंगवश-'सर्वजन हिताय: बहुजन सुखाय'

राजनीतिक विज्ञानी राज्य की उत्पत्ति का प्रमुख कारण कानून व्यवस्था को मानते हैं। राज्य को आवश्यक बुराई मानने वाले राजनीतिक विज्ञानी भी वह आवश्यकता कानून व्यवस्था ही मानते हैं। शासन का शाब्दिक अर्थ ही नियंत्रण होता है और मनुष्य सदैव स्वतंत्र रहना चाहता है लेकिन फिर भी उसने शासन को स्वीकार किया, किसी अन्य का नियंत्रण स्वीकार किया क्यों कि वह भी कानून व्यवस्था चाहता है। इस प्रकार विभिन्न दृष्टिकोणों से देखें तो राज्य का मूल कारण और कर्तव्य कानून व्यवस्था ही है। मानव के भीतर बैठी दैवीय प्रवृत्तियां विकास चाहती है, आगे बढ़ना चाहती हैं लेकिन वहीं बैठी दानवी प्रवृत्तियां स्वच्छंदता चाहती हैं। उन्हीं स्वच्छंद प्रवृत्तियों के कारण स्वयं के विकास के साथ-साथ अन्यों के विकास में भी बाधा उत्पन्न होती है। ऐसी बाधाओं को रोकने के लिए अस्तित्व में आई कानून व्यवस्था को लागू करने के लिए ही राज्य का नियंत्रण स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि राज्य का मूल कर्तव्य कानून व्यवस्था को लागू करना ही है। प्राचीन काल से ही राज्य का यही मुख्य काम रहा है और जिस राज्य में यह सब सम्यक रीति से होता रहा वहां शेष सभी कार्य सुचारू संचालित होते रहे। वहां शोषण स्वतः रुकता है क्यों कि शोषण तो कानून व्यवस्था के भंग होने का परिणाम है। वहां संसाधनों का समुचित वितरण भी स्वाभाविक होगा क्यों कि वह भी कानून व्यवस्था के अधीन ही और तत्संबंधी कानूनों का समुचित पालन पर वह स्वतः होगा। वहां अवसरों की समानता भी स्वतः स्थापित होगी क्यों कि अवैध रूप से अवसरों के हड़पने की संभावना को कानून व्यवस्था का सफल क्रियान्वयन रोकेगा। जहां कानून व्यवस्था सम्यक रीति से लागू होगी वहां अराजकता नहीं होगी और जब अराजकता नहीं होगी तो समस्त व्यवस्थाएं समुचित संचालित होकर शोषण की संभावना को समाप्त करेंगी। जहां शोषण नहीं होगा वहां जनकल्याण भी स्वाभाविक रूप से संपादित होगा। इस प्रकार राज्य की नवीन अवधारणा के तहत जो सब काम राज्य के बताए गए हैं उन सबके सफल क्रियान्वयन की प्रथम शर्त कानून और व्यवस्था का सफल संचालन है। लेकिन दुर्भाग्य से आज का राज्य इस मूल काम को नैपथ्य में रखकर, उसकी प्राथमिकता को स्थगित कर अपने मतदाताओं को प्रसन्न रखने वाले कामों पर उनकी इच्छाओं को तुष्ट करने वाले कामों पर अधिक ध्यान देता है और उसका परिणाम हमारे सामने प्रकट हो रहा है कि ना तो वे लक्ष्य हासिल हो रहे है और ना ही कानून व्यवस्था का पालन सही रीति से हो पा रहा है। अभी संसार में एक महामारी का संकट चल रहा है। एक ऐसी महामारी का जिसमें कानून व्यवस्था ने महत्वपूर्ण रोल अदा किया है। ऐसी महामारी जिसमें लोगों को घर में रहने के लिए कहा गया, जिसमें लोगों को आगे आकर अपनी जांच कराने के लिए कहा गया, एक ऐसी महामारी जिसमें लोगों को अपना सम्पर्क इतिहास बताने के लिए कहा गया लेकिन हमने देखा कि हम अनेक जगह असफल हुए। जब समाज के अनेक लोगों को बचाने के लिए कुछ लोगों की इच्छाओं और आदतों पर निमंत्रण करने की आवश्यकता होती है तब ही कानून व्यवस्था की आवश्यकता होती है। जब अधिसंख्य लोगों के हित के लिए कुछ लोगों की सुखेच्छा को नियंत्रण में लाना पड़ता है तब ही कानून व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे में कानून व्यवस्था लागू करने वाले शासन को माननीय पहलुओं के साथ निष्पक्ष होना पड़ता है लेकिन हमने देखा कि क्या हमारी शासन व्यवस्था ऐसा कर पाई? तो उत्तर निश्चित रूप से यही मिलेगा कि नहीं कर पाई। अपने जनकल्याण कारी स्वरूप की आड़ में सरकारें 'बहुजन सुखायः, सर्वजन हिताय' की अपेक्षा 'मतदाता सुखायः, मतदाता हिताय' के मंत्र को जपती रहीं। इसीलिए मतदाताओं को खुश करने के लिए कभी सीमाएं बंद की गई तो कभी खुली छोड़ी गई। निषेधाज्ञा, कर्फ्यू और महाकर्फ्यू जैसे शब्द मीडिया में तैरते रहे लेकिन धरातल पर बीमारी के संवाहकों का मूवमेंट जारी रहा। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

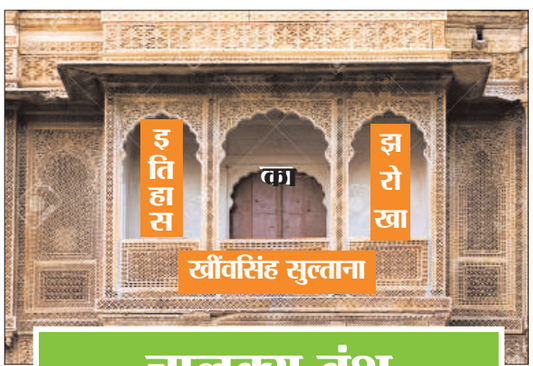

चालुक्य वंश (पुलकेशिन द्वितीय)

पुलकेशिन द्वितीय चालुक्य वंश के शासकों में सर्वाधिक योग्य और प्रतापी शासक था। उसके शासनकाल में चालुक्य वंश का गौरव चरमोत्कर्स पर पहुंचा। अपने पिता की मृत्यु के समय पुलकेशिन के बालक होने के कारण उसके चाचा मंगलेश ने उसके संरक्षक के रूप में राजकार्य किया परन्तु पुलकेशिन के युवा होने पर भी जब मंगलेश ने राज्य उसे सौंपने की बजाय अपने पुत्र को युवराज बना दिया तब पुलकेशिन को राज्य छोड़कर अन्यत्र शरण लेनी पड़ी। धीरे-धीरे मंगलेश के विरोधियों को अपनी ओर मिलाकर एक शक्तिशाली सेना का संगठन करके, पुलकेशिन द्वितीय ने मंगलेश पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में मंगलेश युद्ध क्षेत्र में मारा गया और पुलकेशिन चालुक्य साम्राज्य के राज सिंहासन पर विराजित हुआ। पुलकेशिन वातापी के चालुक्य वंश का शासक तो बन गया था, परन्तु इस गृह युद्ध के कारण चालुक्य राज्य में अराजकता और अव्यवस्था फैल गई थी। अधीनस्थ सामन्त स्वतंत्र शासकों की तरह आचरण करने लग गए थे। निकटवर्ती प्रदेशों के कुछ शासकों ने संघ बनाकर वातापी पर आक्रमण की योनजा बना ली थी लेकिन पुलकेशिन ने अपनी योग्यता व कुशल नीतियों से ना केवल इन समस्याओं से पार पाया वरन अनेकानेक विजयों से चालुक्य साम्राज्य का चर्तुदिक विस्तार भी किया। पुलकेशिन की इन सभी उपलब्धियों का वर्णन हमें उनकी सेहोल प्रशस्ति से मिलता है।

पुलकेशिन ने राज्य विस्तार के लिए सर्वप्रथम कदम्ब राज्य पर आक्रमण किया जो कि चालुक्य राज्य के गृहयुद्ध की स्थिति का फायदा उठाते हुए अपनी शक्ति का विस्तार कर रहा था उसकी राजधानी बनवासी को ध्वस्त कर दिया गया, कदम्बो की स्वतंत्रता का अन्त कर दिया गया और उसे सामन्तों में बांट दिया गया। कदम्बो को जीतने के बाद पुलकेशिन ने आलुपो (दक्षिण कर्नाटक के शासक) तथा गगो के विरुद्ध अभियान किया और उन्हें परास्त किया। पराजित गगा नरेश दुर्वीनित ने अपनी पुत्री का विवाह पुलकेशिन से किया। आलुपा तथा गगो को जीतने के बाद उसने कोंकण के मौर्यों को परास्त कर उनकी राजधानी पर अधिकार कर लिया। कोंकण प्रदेश के बंदरगाहों पर अधिकार कर लेने से चालुक्य साम्राज्य के व्यापार में आशातीत वृद्धि हुई। ऐहोल प्रशस्ति से पता चलता है कि उसने लाट प्रदेश (दक्षिणी गुजरात), मालवा और गुर्जर प्रदेश (भंडौच) को भी जीत लिया था। इन विजयों के परिणाम स्वरूप अब चालुक्य साम्राज्य की सीमाएं उत्तर में हर्ष के साम्राज्य की सीमाओं से टकराने लग गई थीं। दोनों ही शासक अत्यन्त शक्तिशाली और महत्वकांक्षी शासक थे, दोनों की सेनाओं के मध्य नर्मदा तट पर भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें हर्ष की पराजय हुई। इसकी पुष्टि ऐहोल प्रशस्ति व हुएनसांग के यात्रा विवरण से होती है। इस युद्ध के उपरान्त भी दोनों के मध्य कुछ छुट-पुट संघर्ष की जानकारी मिलती है। दोनों के मध्य अंतिम संघर्ष 643 ई. में हुआ जब हर्ष ने कांगोद पर आक्रमण किया और उसे अपने साम्राज्य में मिला लिया। पुलकेशिन द्वितीय के शासन काल में पल्लव-चालुक्य संघर्ष की शुरुआत हुई जब पुलकेशिन ने पल्लव शासक महेन्द्र बर्मन प्रथम पर आक्रमण किया और उसके राज्य के उत्तरी प्रान्तों पर अधिकार कर लिया। यह आक्रमण संवत 630 ई. में हुआ था। कालान्तर में पुलकेशिन ने पुनः पल्लव राज्य पर आक्रमण किया परन्तु उसे पल्लव शासक नरसिंह वर्मन प्रथम से परास्त होना पड़ा। इसके बाद नरसिंह वर्मन ने चालुक्य राज्य पर आक्रमण किया, पुलकेशिन युद्ध में लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। पुलकेशिन द्वितीय ने 610 ई. से 643 ई. तक शासन किया। उसकी उदारता और प्रभुता दूर-दूर तक फैली हुई थी। वह एक महान विजेता, प्रजा हितैषी व विद्वानों का आश्रयदाता था। वह चालुक्य वंश का महानतम शासक था। **(क्रमशः)**

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

भूमिका : गीता और समाज सेवा

('गीता' पूज्य तनसिंह जी के जीवन दर्शन का आधार था। उसी आधार पर उन्होंने अपने जीवन दर्शन के संस्थागत स्वरूप श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। गीता एक समाजसेवी के लिए किस प्रकार आधार भूत शास्त्र है इसको लेकर उन्होंने एक पुस्तक 'गीता और समाज सेवा' लिखी। प्रस्तुत है उस पुस्तक की पूज्य श्री द्वारा लिखी भूमिका का दूसरा भाग। पहला भाग विगत अंक में प्रकाशित किया जा चुका है।)

गीता का साधक

गीता की साधना कोई कठिन साधना नहीं है। इसके साधक के लिए भी कोई विशेषता नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति की प्राकृतिक अवस्था को भली-भांति जाना है। इन्द्रियां प्रमथन स्वभाव वाली हैं मगर वह बार-बार स्थिति के यत्न करने और अभ्यास से वश में की जा सकती हैं। गीता अपने साधक को मितव्ययी और कष्ट-सहिष्णु बनाती है। वह तो कहती है कि शरीर की आवश्यकताओं को कम करके ही इन्द्रियां वश में की जा सकती हैं और जिसकी इन्द्रियां वश में होती हैं वही स्थितप्रज्ञ है -

वशेहि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता। - **गीता 2/61**

आज के समाज-सेवक को साधना चाहिए, धन चाहिए और उनके आराम के भी कुछ उपकरण चाहिए परन्तु गीता कहती है -

मात्रा स्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत।।

- गीता 2/14

सर्दी-गर्मी और सुख-दुःख देने वाले इन्द्रिय और विषयों के संयोग तो क्षण-भंगुर हैं और अनित्य हैं, इसीलिए उन्हें सहन करना चाहिए। गीता के साधक को हठयोगी नहीं होना है। इन्द्रियों को हठ से रोकने का कार्य बहुत कठिन है और अप्राकृतिक भी क्योंकि शरीर की स्थूल आवश्यकताएं हटाने पर भी मन व्यभिचारी बना ही रहता है -

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।। - **गीता 3/6**

मूढ़-बुद्धि पुरुष कर्मेन्द्रियों को हठ से रोककर इन्द्रियों के भोगों का मन से चिंतन करता है, वह मिथ्याचारी कहलाता है, किन्तु -

कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते। - **गीता 3/7**

अनासक्त हुआ जो कर्मेन्द्रियों से कर्मयोग का आचरण करता है वह श्रेष्ठ है। इस प्रकार गीता के साधक को सर्वप्रथम स्वयं को ही अपना कार्य क्षेत्र बनाना पड़ता है। यही सबसे अच्छा है, क्योंकि चरित्रहीन ज्ञानी अपने और समाज दोनों के लिए घातक होता है। समाज का कार्य करते हुए हमें अच्छे और बुरे सभी मिलते हैं और बुरों को मिलना और अच्छों का मिलना कोई आश्चर्य की वस्तु नहीं है कि एक के मिलने से हमें दुःख हो और दूसरे के मिलने से अपार आनन्द हो। यदि समाज सेवक बुरे के मिलने पर दुःख अनुभव करता हो, उससे घृणा करता हो तो उसने खुद ही अपना कार्य क्षेत्र समाप्त कर दिया है। सभी सृष्टि त्रिगुणमयी माया का विकार है। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो सत्वादि तीनों गुणों से परे हो, इसलिए सच्चे समाजसेवक को सबसे समान व्यवहार करना चाहिए-

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते।। - **गीता 6/9**

'जो पुरुष सुहृद मित्र, बैरी, उदासीन, मध्यस्थ द्वेषी और बन्धुगण तथा धर्मात्माओं में और पापियों में समान भाव वाला है, वह अति श्रेष्ठ है।' यही भाव असल में लोक-संग्रह का सबसे महत्वपूर्ण गीता का भाव है जिसके बिना समाज कार्य का उत्तम रूप से होना कठिन है।

गीता का पुनर्जन्म और अवतारवाद का सिद्धान्त

सनातन धर्म के दो महत्वपूर्ण सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति गीता में मिलती है और वे हैं पुनर्जन्म और अवतारवाद। यह दोनों सिद्धान्त एक-दूसरे के पूरक हैं। पुनर्जन्म का सिद्धान्त वैज्ञानिक भी है और समाजसेवक के लिए प्रेरणास्पद भी। समाज सेवक जीवन भर कार्य करता है और अन्त तक उसे उसी का अभाव खटकता है और इसीलिए वह नव जन्म लेकर उसी कार्य को पूर्ण करता है -

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।। - **गीता 8/6**

मनुष्य अन्तकाल में जिस-जिस भाव को स्मरण करता है वह उसको ही प्राप्त होता है क्योंकि सदा जिस भाव का चिन्तन करता है, अन्तकाल में प्रायः उसी का स्मरण होता है। गीता समाजसेवक को आश्वासन देती है कि तेरे सम्पूर्ण जीवन में संस्कार तुझे तेरे कार्य में आखिर सफलता देंगे और वह सफलता इस जीवन में नहीं तो अगले जीवन में ही सही, पर निश्चय मन होकर कार्य करने पर सिद्धि अवश्य मिलेगी। इतना ही नहीं, गीता ने तो इससे भी बढ़ कर आश्वासन दिया है कि मनुष्य की शक्तियां यदि असफल भी सिद्ध हो गईं तो भगवद्शक्ति उसका कार्य पूर्ण कर लेगी, इसलिए समाजसेवक को गीता के भगवान कहते हैं -

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

- गीता 18/66

'सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्य कर्मों को मुझमें त्याग कर तू केवल एक मेरी शरण में आ जा, मैं तुझे कर्म के दोषों से ही मुक्त कर दूंगा।' सृष्टि के उद्देश्य साधन के लिए व्यक्ति जब अपने स्वाभाविक कर्मों को भूलकर अधर्म का आश्रय लेते हैं तब भगवान को माया का आश्रय लेकर अजन्मा होकर भी जन्म ग्रहण करना पड़ता है -

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया।।

- गीता 4/6

'मेरा जन्म प्राकृत मनुष्यों के सदृश्य नहीं है। मैं अविनाशी स्वरूप अजन्मा होकर भी तथा सभी भूत प्राणियों का ईश्वर होने पर भी अपनी प्रकृति को अधीन करके योगमाया से प्रकट होता हूं।' भगवान के प्रकट होने के कार्य का आभास इसी अध्याय के आगामी दो श्लोकों में मिलता है :

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।। **गीता 4/7-8**

'धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि पर मैं साधु पुरुषों के उद्धार व दूषित कर्मों के करने वालों का नाश करने के लिए तथा धर्मस्थापना के लिए अपने रूप रचता हूं।' गीता के अवतारवाद व जन्मान्तरवाद के सिद्धान्त ने समाज सेवक को निराश होने से बचा लिया और उसे व भगवान को एक-दूसरे का सहायक व मित्र बना दिया है।

भौतिकवाद और गीता

गीता का आन्दोलन अध्यात्मवाद का आन्दोलन है। गीता का मत है कि भौतिकवाद आसुरी प्रकृति व स्वभाव का है और उससे व्यक्ति की आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता। आजकल भौतिकवाद का बड़ा जोर है। लोग धर्मनिरपेक्ष जीवन और राज्य की कल्पनाएं भौतिकवाद के आधार पर करते हैं। भौतिकवाद शरीर को ही प्रधान मानकर आत्मा की चिन्ता से मुक्त होने का प्रयास करता है। वह भगवान को संसार का आधार नहीं मानता बल्कि विश्व को स्त्री और पुरुष के संसर्ग का प्राकृतिक परिणाम मानता है। गीता में इस प्रकार की प्रवृति का निरूपण अध्याय 16 में मिलता है -

प्रवृतिं च निवृतिं च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते।।
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम्।।

- गीता 16/7-8

आसुरी स्वभाव वाले मनुष्य कर्तव्य-कार्य में प्रवृत होने को और अकर्तव्य कार्य से निवृत होने को भी नहीं जानते इसलिए उनमें न तो बाहर-भीतर की शुद्धि है और न श्रेष्ठ आचरण और न सत्य भाषण ही है तथा वे आसुरी प्रकृति वाले मनुष्य कहते हैं कि जगत आश्रयरहित और सर्वथा झूठा और बिना ईश्वर के अपने आप स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न हुआ है, इसलिए केवल भोगों को भोगने के लिए ही है, इसके सिवाय और क्या है?

ऐसी प्रवृति वालों के लिए गीता का कहना है कि उन्हें कभी सद्गति नहीं मिलती :

क्षिपाम्यजस्त्रमशु भानासुरीष्वेव योनिषु। - **गीता 16/19**

ऐसे नराधमों को मैं संसार में बार-बार आसुरी योनियों में ही गिराता हूं।

भौतिकवाद के विरुद्ध गीता का सम्पूर्ण ज्ञान अध्यात्मवाद पर आधारित है जिसमें समाज सेवक के लिए सांख्य योग और कर्मयोग के मार्ग बहुत सरल और उपयोगी हैं। फल और आसक्ति से रहित किए गए कर्म को कर्मयोग कहते हैं और कर्तापन की भावना के त्याग को सांख्य योग कहते हैं। दोनों का एक ही फल है :

सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्।।

- गीता 5/4

'इन दोनों में से एक में भी अच्छी प्रकार स्थित हुआ पुरुष दोनों के फलरूप परमात्मा को प्राप्त होता है।' भौतिकवाद के विरुद्ध यह दो व्यवहारिक विचार-प्रणालियां समाजसेवक के लिए अध्यात्मवाद के प्रसार के अतिरिक्त व्यवहारिक सफलता देती हैं क्योंकि फल और आसक्ति से रहित हुआ कर्म मोह, लोभ, द्वेष आदि पैदा नहीं करता और साथ-ही-साथ कर्तव्य मार्ग में परिणाम की चिन्ता से मुक्ति देता है। सांख्ययोग द्वारा कर्तापन की भावना का त्याग व्यक्तित्व में मिठास ही नहीं भरता बल्कि अहंभाव और व्यक्तिवाद का जड़मूल से विनाश करता है जिसका विनाश संगठन और समाज कार्य के लिए नितान्त आवश्यक है।

उपसंहार

गीता ने एक जगह कहा है कि निश्चय ही इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला कुछ भी नहीं है।

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। - **गीता 4/38**

इसलिए ज्ञान चाहे जितना ही थोड़ा क्यों न हो, उसका प्रकाश सैकड़ों वर्षों के संचित अन्धकार को क्षण भर में ही भगा देता है। अन्धकार चाहे जितना संगठित होकर आवे-वह ज्ञान के मोमबत्ती जितने प्रकाश को भी बुझा सकने की सामर्थ्य नहीं रखता। गीता ज्ञान का विपुल भण्डार है। उसमें जितना गहरा जाया जाएगा उतने ही अधिक रत्न प्राप्त होंगे। इसलिए इस छोटी-सी पुस्तक में मैंने जो गीता को अपने दृष्टिकोण से देखने की कोशिश की है- व्यक्त करने में बहुत ही संक्षिप्त हो गया हूं। अतः धैर्यपूर्वक पढ़ने पर ही मेरी बातों का साम्य पैदा होगा। मैं तो यह कहूंगा कि गीता हर व्यक्ति को पढ़नी चाहिए और यह भी कहूंगा कि जो व्यक्ति इसे जिस रूप में देखने की कोशिश करेगा उसे गीता उसी रूप में दिखेगी। गीता जैसी अमृतदायिनी वाणी को छोड़ कर अन्य धर्म ग्रन्थों में प्रकाश ढूंढना हमारे जैसे साधारण बुद्धिजीवी लोगों के लिए कष्टप्रद है। इसीलिए तो महाभारत में महर्षि वेदव्यास ने कहा है -

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुख पद्माद्विनिःसुता।।

जो पद्मनाभ विष्णु भगवान के मुखारविन्द से निकली है उसे छोड़ कर अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या प्रयोजन!

-लेखक

(पृष्ठ तीन का शेष)

प्रताप एक..

16 वीं सदी में भारत की सबसे बड़ी शक्ति मुगल साम्राज्य के समक्ष मेवाड़ भौगोलिक, आर्थिक एवं सैन्य शक्ति से अत्यंत छोटा एवं कमजोर था, फिर भी जिस जीवटता से स्वाभिमान के पुजारी महाराणा प्रताप ने स्वतंत्रता का बिगुल बजा कर स्वाधीनता की लौ को जिंदा रखा, उसने कुछ ही समय में मुगलों की सत्ता की नींव को कमजोर कर दिया। उनकी प्रेरणा से आगे अनेक शासकों ने स्वाधीन राज्यों की स्थापना की। आधुनिक काल में भी राणा प्रताप क्रांतिकारियों के प्रेरणा पुंज थे। हल्दीघाटी क्रांतिकारियों का तीर्थ स्थल बन गई, अनेकों क्रांतिकारी हल्दीघाटी की मिट्टी से स्वाधीनता की शपथ लेते। राणा प्रताप की वीरता, अडिगता, स्वाधीनता की प्रतिबद्धता ने राष्ट्रभक्त क्रांतिकारीयों के लिए चिंगारी का काम किया। गणेश शंकर विद्यार्थी, चंद्रशेखर आजाद आदि अनेक क्रांतिकारियों ने महाराणा प्रताप के मार्ग पर वतन की खातिर सर्वस्व त्याग दिया। कई क्रांतिकारियों ने राणा प्रताप की छापामार युद्ध प्रणाली को अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष का मुख्य हथियार बनाया।

9 मई 1540 को जन्में महाराणा प्रताप मात्र 57 वर्ष की आयु में विश्व के समक्ष अनेकों आदर्शात्मक उदाहरण छोड़ कर चले गए। आज महाराणा प्रताप एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचारधारा बन गये जो मानव जाति को सामाजिक समानता, समरसता, समावेशी विकास, दलित-उद्धार, नारी-रक्षा तथा स्वाभिमान एवं स्वाधीनता की रक्षा के लिए सर्वस्व त्याग की युगों युगों तक प्रेरणा देती रहेगी।

अंत में-

गिरा जहां पर खून वहाँ का, पत्थर-पत्थर ज़िन्दा है..
जिस्म नही है मगर नाम का, अक्षर-अक्षर ज़िन्दा है..
जीवन में यह अमर कहानी, अक्षर-अक्षर गढ़ लेना,
शौर्य कभी सो जाए तो, राणा प्रताप को पढ़ लेना।

अदम्य साहस, समर्पण, बलिदान, स्वाभिमान, देशभक्ति के प्रतीक वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप को कोटिशः नमन।

सादर।
स्वामी धर्मबंधु
श्री वैदिक मिशन ट्रस्ट

(पृष्ठ एक का शेष)

एक निष्ठ...

हर वर्ग, जाति और समुदाय के व्यक्ति को सोचना चाहिए कि राष्ट्र बच जाएगा तो हम भी बच जाएंगे। पूज्य तनसिंह जी का संदेश है, 'करने आए कर न सके तो जीवन तरूवर व्यर्थ फले हैं।' इसे स्मरण रखें। सोचें हम क्या कर सकते हैं और उनके इस संदेश को प्रसारित करें। मानव जाति के इस संकट से समस्त जड़ चेतन प्रभावित होगा इसलिए उदारतापूर्वक डटकर मुकाबला करने को तत्पर रहें। प्रारंभ में संघ के कार्यकर्ताओं को संदेश दिया गया था कि सदैव राष्ट्र के लिए तैयार रहें, हमसे कुछ मांगे तो अवश्य देवें लेकिन स्वयं किसी से कुछ भी न मांगे। कष्ट सहते रहें, यही तस्या है और हमारी यह तपस्या ही राष्ट्र को अग्रणी बनाएगी। इस संकट के कारण जो हुतात्मा हो गए हैं उनके परिवारों के प्रति मैं संवेदना व्यक्त करता हूं, परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वे उन हुतात्माओं अखंड शांति प्रदान करें। अंत में माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि विश्वात्मा के दृष्टिकोण से क्या करना चाहिए वह करें। युद्ध के समय निराश अर्जुन को दिए गए संदेश को पढ़े, अध्ययन के लिए नहीं बल्कि अभ्यास के लिए पढ़ें। वह आचरण ही हमें धर्मनिष्ठ बनाएगा।

वर्चुअल माध्यम...

इसके पश्चात माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने अपने उद्बोधन में प्रताप के जीवन चरित्र का तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया, साथ ही उनसे जुड़े कतिपय काल्पनिक प्रसंगों का खंडन करते हुए ऐतिहासिक तथ्यों को सामने रखा। उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना को भी स्पष्ट किया और प्रताप के संघर्ष और संघ की साधना की साम्यता को रेखांकित किया। उक्त कार्यक्रम को संघ के फेस बुक पेज से 70 हजार से अधिक व्यक्तियों द्वारा देखा गया। कार्यक्रम का प्रसारण जूम चैनल के यूट्यूब एकाउंट पर तथा श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के अधिकृत फेसबुक पेज पर भी किया गया। अभी भी फेसबुक पेज पर इस उद्बोधन को देखने व सुनने वाले लोगों की संख्या निरंतर बढ रही है। सभी जगह स्वयंसेवक व अन्य लोग लाईव कार्यक्रम से जुड़े व संघ द्वारा निर्धारित समय के दौरान ही जुड़कर राष्ट्र के महान नायक के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

●●●

वो (गजल)

मुझे मालूम है कंधे से उठ,
सर पर चढ़ेगा वो,
मगर खुश हूँ कि है मेरा लहू,
मुझसे बढ़ेगा वो।

तुम्हें तखलीफ क्यों होती,
बताओ देखकर झुकते,
पढ़ाया जो उसे मैंने,
वही सब तो पढ़ेगा वो।

यही दस्तूर है जग का कि
जैसा बीज फल वैसा,
मिलेगा गुरु जिसे जैसा,
उसी जैसा गढ़ेगा वो।

चला चरखा, बनाया सूत,
बेमन और बेढंगा,
अगर बिगड़ा हुआ है सूत तो
बिगड़ा कढ़ेगा वो।

गटक सब, लीलता मीठा
व कड़वा थूक देता जो,
अवध हर दोष - ऐबों को भी
दूजे पे मढ़ेगा वो।

●●●

जिंदगी (अतुकांत कविता)

ओस की इक बूँद - सी
है जिंदगी मेरी
कभी फूल, कभी धूल
कभी आग या हवा
सोख लेता सूर्य
या बरसात में मिलना
है नहीं रक्षित कहीं
मेरी जगह
मेरा वजूद।

जिंदगी का चक्र
फिर भी ठेलता हुआ
चल रहा हूँ देख सूरज,
चाँद, तारों को
अनगिनत राही
गये होंगे क्षितिज को लाँघकर
छोड़कर अमरत्व की
ख़्वाहिश हठीली
अप्राप्य मनभावन रसीली
कर्मपथ पर बढ़ रहा हूँ
जिंदगी सर पर उठाये
चल रहा हूँ।

है मगर कोशिश मेरी
कि लौटकर
पीछे कभी मत देखना
रुकना नहीं
झुकना नहीं
बस जिंदगी की बूँद को
पल भर सही
अपनत्व दे दो।

डॉ. अवधेश कुमार अवध
मेघालय

(पृष्ठ पांच का शेष)

प्रसंगवश...

इस प्रकार के निर्णयों को लागू करने वाली मशीनरी अपनी सम्पूर्ण व्यवसायिक कुशलताओं के बावजूद अपने राजनीतिक आकाओं के हित साधन हेतु पंगु बनी रही और बीमारी का संक्रमण होता रहा। हम कभी केन्द्र को तो कभी राज्यों को दोष देते रहे। लेकिन दोष किसी एक सरकार का नहीं, एक व्यक्ति का नहीं बल्कि व्यवस्था के मूल में बैठी उस धारणा का है जिसमें कानून व्यवस्था की पालना प्राथमिकताओं की सूची में बहुत नीचे सरक गई है और जनकल्याणकारी राज्य की अवधारणा की आड़ में मतदाताओं की मिजाज पूर्सी ही महत्व पा रही है। यह केवल एक संकट की बात नहीं है बल्कि आज के शासन का चरित्र ही ऐसा हो गया है। शासन का चरित्र सबको राजी करने वाला नहीं बल्कि सबका हित करने वाला होना चाहिए। उसके लिए उसे अपने मूल कार्य कानून व्यवस्था को प्राथमिकता देनी ही पड़ेगी और यदि वह नहीं होगी तो फिर सभी जनकल्याणकारी अवधारणाएं इस एक विशेषता के अभाव में धरी रह जाएंगी। इसीलिए क्षत्रियत्व का आदर्श 'सर्वजन हितायः बहुजन सुखाय' रहा है।

(पृष्ठ दो का शेष)

गुजराती वीर...

रावल जयसिंह : अहमदाबाद के शासक महमूद बेगड़ा से बीस महीने युद्ध चला। बेगड़ा ने रावल को इस्लाम स्वीकार करने को कहा। परन्तु उन्होंने बेगड़ा से लड़कर मरना उचित समझा। रावल जयसिंह खींची चौहानों की राजधानी चांपानेर पावागढ के शासक थे। खींचीयो ने 200 वर्ष तक वहां स्वतंत्र राज्य किया। पावागढ का प्रसिद्ध मां काली उनके राज्य का रक्षक रही हैं।

राव नवगण : जूनागढ ने नवगण अपनी मुंह बोली बहन जाहल को सिन्ध के बादशाह को मारकर छुड़ा लाए थे।

राणा विकमातजी : छाया के जेठवा खीमा जी के पुत्र विकमात जी (द्वितीय) ने पोरबन्दर को मुगलों से जीत कर वहां पर दुर्ग बनवाया। तब से आज तक पोरबन्दर जेठवा राजपूतों की राजधानी रहा है। इन्हीं जेठवों की वंश के एक राजपूत नवयुवक की प्रेमकथा उजली-जेठवा प्रसिद्ध है।

जैसा जी वेजा जी : ये सरवैया राजपूत थे अमरेली के पास इनकी जागीरें थी जिन्हें जूनागढ के नवाब ने हड़प ली। तब ये बागी अथवा बारोटिये बनकर बादशाह के गांव एवं खजाने लूटते रहे। परन्तु गरीब प्रजा को कभी तंग नहीं किया। अन्त में थककर बादशाह ने इन्हें समझौता कर जागीरें लौटा दी।

रणमलजी जाड़ेजा : राजकोट के राजा ठाकुर मेहरामनजी को मारकर मासूम खां ने राजकोट का नाम मासूमाबाद रख दिया। मेहरमानजी के पुत्र रणमल जी अपने छह भाइयों के साथ मिलकर 12 वर्ष बाद मासूम खां को मारकर राजकोट व सरधार जीत कर गद्दी पर बैठे।

राव रणमल राठौड़ : उत्तर गुजरात में ईडर हिम्मतनगर राठौड़ों की बड़ी रियासत रही है। जफर खां ने ईडर पर भारी फौज लेकर हमला किया।

राव रणमल राठौड़ ने उसे धूल चटाकर युद्ध जीत लिया। इस उपलक्ष्य में श्रीधर व्यास द्वारा रचित बखान के 'रणमल छन्द' प्रसिद्ध है।

वीर धवल वाघेला : पाटण की रानी नैकिदेवी के सेनापति वीर धवल वाघेला एवं भीमदेव सोलंकी द्वितीय ने मुहम्मद गौरी की सेना को आबू पर्वत के जंगलों में कुचल डाला था तथा कुतुबद्दीन ऐबक को हराकर गुजरात से बाहर खदेड़ दिया था।

ओमसिंह हुरों का तला का देहावसान

संघ के स्वयंसेवक गणपतसिंह हुरों का तला के दादोसा **ओमसिंह** हुरों का तला का 27 अप्रेल को देहावसान हो गया। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देकर अखंड शांति प्रदान करें।

ओमसिंह

(महाराणा प्रताप जयंती के वर्चुअल कार्यक्रम में माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के उद्बोधन का संपादित अंश)

'प्रताप के संघर्ष के समान ही है संघ कार्य'

भारतीय इतिहास के विशिष्ट नरत्नों में से एक नररत्न महाराणा प्रताप की जयन्ती आज हम मना रहे हैं। जनता का महाराणा प्रताप के प्रति प्रारम्भ से ही अत्यंत स्नेह था। इस स्नेह के कारण ही उन्हें प्रेमपूर्ण संबोधन 'कीका' से बुलाया जाता था। हालांकि प्रारम्भ से ही पारिवारिक परिस्थितियों के कारण महाराणा प्रताप को उपेक्षा का सामना करना पड़ा। इस उपेक्षा के कारण उनका अधिकतर समय सैनिकों के साथ बीता। इससे उनका जीवन बड़ा सादगीपूर्ण और संघर्षपूर्ण रहा। इन परिस्थितियों के कारण वे एक कुशल योद्धा, रणनीतिज्ञ और नेतृत्वकर्ता बनकर उभरे। उनके पिता महाराणा उदयसिंह जी को विभिन्न अवसरों पर प्रताप की इन विशेषताओं का लाभ मिलता रहा और प्रताप का सम्मान सभी के दिलों में बढ़ता रहा। निरंतर संघर्ष के कारण उनके जीवन में एक अदम्य उत्साह, सहनशीलता, धैर्य और अक्लांत परिश्रम की क्षमता ने जन्म लिया। उदयसिंह जी के देहांत के पश्चात जब प्रताप के छोटे भाई जगमाल का षड्यंत्रपूर्वक राजतिलक कर दिया गया तब प्रताप राज्य को गृहयुद्ध की स्थिति से बचाने के लिए मेवाड़ त्याग कर जाना चाहते थे लेकिन मेवाड़ के सामन्तों और जनता ने जगमाल को सिंहासन से उतारकर प्रताप को सिंहासन पर आरूढ़ किया। विरासत में उनको छिन्न-भिन्न राज्यव्यवस्था मिली, चित्तौड़ हाथ से निकल चुका था और राज्य की सुरक्षा भी खतरे में थी। ऐसे में अकबर ने विभिन्न दूत भेजकर महाराणा प्रताप पर संधि व समझौते के लिए दबाव डाला परन्तु महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की स्वाधीनता को बरकरार रखने के लिए ऐसे सभी प्रस्तावों को ठुकरा दिया। तब अकबर ने महाराणा प्रताप को जिंदा अथवा मुर्दा पकड़ने के लिए सैन्य अभियान प्रारम्भ किया परंतु महाराणा प्रताप की सैन्य तथा रणनीतिक कुशलता के कारण अकबर के सभी प्रयास असफल रहे और उसकी सेना को बार-बार मुँह की खानी पड़ी। निरंतर संघर्ष करते हुए चित्तौड़ और मांडलगढ़ को छोड़कर मेवाड़ का सारा क्षेत्र महाराणा प्रताप ने मुगलो से स्वतंत्र करवा लिया था और 1597 में एक स्वाधीन शासक के रूप में उनका देहांत हुआ।

महाराणा प्रताप अकबर जैसे प्रबल शासक के सामने टिक कैसे सके, उसका मुख्य कारण था - उनका चरित्रबल। बहुत ही सादगीपूर्ण जीवन था प्रताप का, जैसा कि सिपाहियों का होता है। उन्होंने करीब सात वर्ष का समय तो एक लोहार के घर बिताया। ऐसी परिस्थितियों में जो रहता है उसका जीवन सादगीपूर्ण बनेगा ही। उनमें अदम्य उत्साह था। बार बार अकबर द्वारा आक्रमण करने पर भी वे कभी निरुत्साहित नहीं हुए। संघर्ष से वे कभी थके नहीं। इन चारित्रिक विशेषताओं के कारण ही प्रजा और सेना दोनों का ही उनको पूर्ण विश्वास हासिल था। लोग उनके इशारे मात्र पर सब कुछ करने को तैयार थे। इस विश्वास और समर्थन के कारण ही वे अपने राज्य को सुरक्षित रखने में सफल रहे।

महाराणा प्रताप का जो जीवन था वह एक प्रबल शत्रु से सफलतापूर्वक लड़ने का जीवन था। आज श्री क्षत्रिय युवक संघ जो कार्य कर रहा है, वह भी ऐसा ही कार्य है। हमारी मयार्दाएं, हमारी परम्पराऐं सब झुठला दी गई हैं। हमारी संस्कृति तहस-नहस कर दी गई है और पूरे भारत देश का वातावरण इतना मैला हो गया है कि लोगों की नकल करने में हम हमारी परंपराओं, विशेषताओं और मान्यताओं को भूल चुके हैं। ऐसी परिस्थिति में कितना बड़ा शत्रु हमारे सामने हैं, यह विचार करने योग्य है। श्री क्षत्रिय युवक संघ आज उन मयार्दाओं को, परंपराओं को पुनः स्थापित करना चाहता है, उस निष्काम कर्मयोग को स्थापित करना चाहता है जिसमें सफलता की कामना नहीं बल्कि कर्त्तव्य ही महत्त्वपूर्ण है। जैसे महाराणा प्रताप ने अपने कर्त्तव्य के सामने शत्रु सेना की विशालता को कोई महत्त्व नहीं दिया, वैसी ही कर्त्तव्य पालन की लड़ाई संघ लड़ रहा है। परन्तु श्री क्षत्रिय युवक संघ के सामने एक नहीं दो शत्रु है। एक शत्रु है बाहरी वातावरण और दूसरा शत्रु है हमारे अंतर में बैठे हुए विकार। बाहरी वातावरण के कारण कर्त्तव्य पालन का जो शिक्षण घर-घर में होता था, जहां 'इला न देणी आपणी' की शिक्षा माता अपने शिशु को बाल्यकाल से ही देती थी- वह शिक्षण आज नहीं हो रहा है। इस शिक्षण के अभाव में हम अपना कर्त्तव्य भूल गए हैं जिससे लगातार हमारा समाज पतन की ओर जा रहा है। जो हमारे समाज की स्थिति है वही हमारी भी स्थिति है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर- ये छहों विकार हमारे भीतर जड़ जमाये बैठे हैं। इन विकारों के कारण हम अपना कर्त्तव्य पालन नहीं कर पा रहे हैं। इसलिये हमारा पहला संघर्ष इन आन्तरिक शत्रुओं को मारना है। भीतरी पवित्रता और नीरवता को प्राप्त करने पर ही हमारा स्वभाव क्षत्रियत्व के अनुकूल बनता है। इसके पश्चात ही हम बाहरी शत्रु अर्थात बाहर के दूषित वातावरण से लड़ने का प्रयत्न करें और हमारी परंपराओं, मान्यताओं और संस्कृति को पुनर्स्थापित करने का प्रयत्न करें। ये दोहरा संघर्ष श्री क्षत्रिय युवक संघ को करना पड़ रहा है। हमारा आंतरिक शत्रु बहुत चालाक है। वह कई छिपे हुए रूपों में आता है और कभी भी आक्रमण करके हमें पतन के मार्ग पर ले जाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ साधना का मार्ग है और इस मार्ग पर ऐसी अनेकों फिसलनें आती हैं किंतु जो गिर कर बार बार संभलते हैं और इस मार्ग को छोड़ते नहीं, इस पर चलते रहते हैं वे ही सफल होते हैं। हमारे सामने अनेक संघर्ष हैं, अनेक अभावों के बीच रहकर हमें लड़ना है। हम साधारण परिवारों से आये हैं और समय आने पर हमें आजीविका आदि का प्रबंध भी करना होता है। इन संघर्षों में भी हम संघ से दूर हो जाते हैं और हमारी साधना रुक जाती है। जो संकल्प पूर्वक लगातार जुड़े रहते हैं उनके सामने भी अनेक बाधाएं आती हैं। कभी अहंकार जाग जाता है कभी प्रशंसा की चाह पैदा हो जाती है, कभी उपेक्षा चुभ जाती है। ऐसी छोटी छोटी बाधाएं हमें अपने मार्ग से विचलित करने का पूरा प्रयत्न करती है। इसलिए महाराणा प्रताप के संघर्ष से भी कहीं अधिक मुश्किल है श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य। महाराणा प्रताप का जीवन एक व्यक्ति का जीवन है और संघ का जीवन एक लम्बी श्रृंखला है, जिसमें न जाने कितनी पीढियां लगेंगी। लेकिन यदि हमने निरन्तर हमारा आत्मावलोकन नहीं किया, निरन्तर हमने अपने आपको तोला नहीं कि कौनसा विकार मुझे अपने मार्ग से भटका रहा है और उस पर मैं कैसे विजय पाऊँ तब तक हम इस साधना में सफल नहीं हो सकेंगे। इसीलिए बार-बार संघ साहित्य, सद्साहित्य का अध्ययन करने की बात कही जाती है, आदर्शों के अनुकरण की बात कही जाती है। जैसे यदि रामायण में से हम किसी भी एक श्रेष्ठ पात्र को अपना आदर्श बनाकर संघ का कार्य करना प्रारंभ कर देंगे तो हमारे विकार स्वतः ही समाप्त होने लग जाएंगे। परन्तु जो छोटी छोटी बातों में सावधानी नहीं रखता वह बह जाता है और श्री क्षत्रिय युवक संघ का इतिहास बता रहा है कि प्रारम्भ से ही जिन जिन के जीवन में ऐसी सावधानी नहीं रही वे लंबे समय तक संघ के साथ नहीं रह सके हैं और जिन्होंने इन बाधाओं को स्वयं पर हावी नहीं होने दिया वे ही संघ के सच्चे स्वयंसेवक बन सके हैं।

भावनगर (गुजरात)

गुड़ा पृथ्वीराज (पाली)

भीलवाड़ा

धोलेरा (गुजरात)

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org